Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका
PEER Reviewed & Refereed JOURNAL
ISSUE- webinar special IMPACT FACTOR - SJIF-6.586, IIFS-4.125, ISSN-2454-6283
AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

अंतरराष्ट्रीय बहु भाषीय एवं बहु शाखीय शोध-पत्रिका

पूना कॉलेज, पूना, अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी, इक्कीसवी सदी में हिंदी साहित्य और मिडिया का बदलता स्वरूप 06 मार्च, 2020
वेबीनार विशेषांक प्रकाशन दिनांक–रविवार, 15 अगस्त 2021

AUGUST 15, 2021

78.इक्कीसवीं सदी की स्त्री कविता का समाजशास्त्र–*डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ*........188
79.इक्कीसवी सदी में मीडिया का बदलता स्वरुप–*प्रा.विद्या बाबूराव खाडे*........192
80–21 वीं सदी में साहित्य का बदलता स्वरूप–*मुमताज इमाम पठाण*........194
81–वैश्वीकरण का प्रतिबिंब : 'दौड़'उपन्यास में परिवर्तित नारी जीवनमूल्य–*डॉ.कामायनी गजानन सुर्वे*........196
82.इक्कीसवी सदी में मीडिया का बदलता स्वरूप–*नागीले मनिषा जनार्धन ;*........199
83.इक्कीसवीं सदी का महिला कथालेखन–*डॉ.शेख शहेनाज अहेमद*........202
84–सोशल मीडिया पर हिंदी साहित्य का स्वरूप–*प्रा. वसुंधरा काशीकर*........205
85. 21 वी सदी में मीडिया का बदलता स्वरूप–*प्रा. स्वाती विष्णू चव्हाण*........207
86.सोशल मीडिया और साहित्य का बदलता स्वरूप–*प्रा. डॉ. सुरेखा प्रेमचंद मंत्री*........210
87. हिंदी भाषा के विकास में संचार माध्यमो का योगदान–*प्रा.सौ. सूर्यवंशी सुनिता रविंद्र*........212
88.इक्कीसवी सदी के हिंदी कविता में नारी विम्रर्श–*डॉ. शिला महादू घूले*........215
89.साहित्य एवं मिडीया का समाज पर प्रभाव–*डॉ. सुभाष सोनाजी जिते*........217
90.इक्कीसवीं सदी में साहित्य का बदलता स्वरूप–*स. प्रा. प्रकाश आनंदा लहाने*........219
91.'समय सरगम' उपन्यास में वृध्द विमर्श–प्रा.डॉ.वसीम मक्रानी........221
92.सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव–*प्रा. डॉ. रेविता बलभीम कावळे*........223
93–संदेह के घेरे में–*डॉ. सुनीता मोटे,*........226

ISSN-2454-6283 PEER Reviewed JOURNAL

जिस तरह से अतुल वैभव ने उपर कहा है आज का युग बदलाव का युग है। मनुष्य का स्वभाव हर क्षण प्रभावित होता है। मनुष्य एक समाज प्रिय प्राणी है। तो समाज में होने वाले बदलाव को वह अपने–आप स्विकार करता है।

इसी तकनीकि के वजह से रेल्वे ट्रॅक पर भिक मॉगनेवाली औरत आज सुप्रसिध्द गायिका राणू मंडल बन सकती है। पढाई के अंतर्गत आनेवाली समस्या को पल में इंटरनेट के माध्यम और गुगल के माध्यम से छुडा सकते है। यह है मिडिया का बदलाव।.

❖ **संदर्भ ग्रंथ**

1) मीडिया लेखन
2) ण्चतंअंजंण्बवउ
3द्ध ण्हववहसमण्बवउ
4) मीडिया लेखन एवं संपादन कला – विजयकुमार आनंद
5) भारती पत्रिका
6) मीडिया लेख एवं जनसंचार – डॉ. संजीव कुमार

ISSN-2454-6283 PEER

83.इक्कीसवीं सदी का महिला कथालेखन

–डॉ.शेख शहेनाज अहेमद
हिंदी विभागाध्यक्षा
हु.जयवंतराव पाटील महाविद्यालय, हिमायतनगर, नांदेड

सन 1975 बीसवीं सदी का उत्तरार्ध। सन 1975 को आंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित किया गया। इस युग तक बहुत सारी महिलाएँ घर की देहरी लांघ चुकी थी। वह अलग–अलग क्षेत्र में अपना जौहर दिखा रही थी। लोग उनकी ओर उम्मी लगा चुके थे कि आने वाले दौर में ये महिलाए क्या करतब दिखाएगी। कुछ जुमले भी औरतों के बारे में मशहुर हो रहे थे कि 'ईक्कीसवी सदी की स्त्री', 'इक्कीसवी सदी की औरत', 'इक्कीसवीं सदी की नारी', आदि। ऐसा लगता था कि कोई धमाका होनेवाला है। किसी और क्षेत्र में हो न हो पर महिला कथा लेखन ने बीसवीं सदी की मृगमरिचिका से लगते आयाम को सच ही छू लिया है, अपना एक इतिहास रचा है। पुरुष व्यवस्था स्त्री को दोयम दर्जे की नागरीक करार करते हुए जिस दृ‍ि से देखता है उसी का पर्याय बन गयी थी। सुधा अरोडा की कहानी "रहोगी तूम वही इस बीसवीं सदी के उत्तरार्थ का मूल स्वर था। मै जीना चाहती हूँ डॉ.नीलिमा सिन्हा की कहानी जिसकी नायिका के पति को एड्स है, सास उसे बार–बार रात में उसके कमरे में भेजती है लेकिन वह जीने के लिए फैसला करती है। यही स्वर लगभग हर महिला कथा लेखिका के कहानियों में धडकता हुआ दिखाई देता है। वैसे भी स्त्री कलम कथाओं में जाने अनजाने स्त्री विमर्श रच डालती है।

बीसवीं सदी की प्रथम कथाकार प्रेमचंद जी की पत्नी शिवरानी, सुभद्राकुमारी सिन्हा, सुभद्राकुमारी चौहान व महादेवी वर्सा सहित भी स्त्री विमर्श को रचने से अछुता कैसे रह सकता था? बीसवीं सदी भी स्त्री विमर्श को रचने से अछुता कैस रह सकता था? बीसवीं सदी के उत्तरार्ध से स्त्री लेखन की जो प्रगति की शुरुआत हुई है उससे इक्कीसवीं सदी तक आते–आते कोई विषय अछूता नही रहा। वैसे ये बात और है कि बीसवी सदी के उत्तरार्ध में कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, मेहरुनिसा परवेज व सूर्यबाला, दीप्ति खंडेलवाल ने स्त्री विमर्श का बिगुल

बजाया। चित्रा मुद्गल, मृदूला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, ममता कातिया, कात्यानी, सुषमा मुनींद्र व अन्य बहुत सी लेखिकाएँ अपने लेखन की अलग पहचान बनाती चली गयी। सुधा अरोडा व नमिता सिंह ने क्रमशः 'बोलो प्रचार की जय व गिनी पिग्स' जैसी कहानियाँ लिखकर स्त्री लेखन में नया आयाम जोड दिया। रजनी गुप्त ने कुछ अलग किस्म के स्त्री पात्र चुने है। कथादेश में प्रकाशित कहानी 'तू पन कहाँ जायेगी?' का आरंभ एक रेल्वे लाईन के किनारे शौच करती एक कचरा बीननेवाली स्त्री से आरंभ होता है, जो कि एक सायकलवाले को गाली दे रही है। ये उसे खुले में शौच करते सायकल रोककर घूर रहा है। नही पता था कि ये समस्या पंद्रह वर्ष पश्चात शौचालय बनाने का ग्रीयमूल बन जायेगी।

इक्कीसवी सदी के आरंभ में महिलाएँ मुक्त होकर लिख रही है। यह दौर मुक्त स्त्री विमर्श से प्रेरित कहानियों का दौर रहा। एक नई पीढी उभरी जो अभिव्यक्ति में बेझिझक थी, ईमानदार थी। कुछ लेखिकाओं को अपने बेबाक लेखन पर भर्त्सना भी सहनी पडी। भर्त्सना सहने वालों की केटेगरी में रमणिका गुप्ता, मैत्रेयी पुष्पा, मनीषा कुलश्रेष्ठ, सोनाली सिंह, जयश्री राय को लिया जा सकता है। मैत्रेयी पुष्पाजी ग्रामीण स्त्रियों की अनकही बातों को साहित्य के माध्यम से बहुत सशक्तता से इसी केंद्र में लेकर आयी। मनीषा कुलश्रेष्ठ व जयश्री राय कहानी में एक मोहक वातावरण रचने में सिद्धहस्त है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की बात की जाए तो रायपूर में रमणिका गुप्ता व मैत्रेयी जी का एक साहित्यिक अपमान भर्त्सना की बात है। सिर्फ इसलिए की वे बेबाकी से स्त्री कामनाओं को चित्रित करती है। क्या स्त्री को अपनी स्त्री सुलभ भावनाओं को अभिव्यक्त करने का अधिकार नही है? स्त्री जबरन अपना अधिकार छीन रही है।

महिला कथाकार अलग–अलग व्यावसायिक क्षेत्र से जुडी होने के कारण अलग–अलग विषयों पर लेखनी चला रही है जैसे लेस्बियन समस्या, उदाहरण के लिए संगीता कांदली की कथादेश में प्रकाशित 'फिनिक्स' व नीलिमा सिन्हा की हंस में प्रकाशित 'मंगला गौरी' एम.एन.सी. में किसी प्रबंधन कार्य करते हुए किसी मुस्लिम से प्रगाडता तो दूसरे सहकर्मियों का जलना या जताना कि हम तुम्हें इस मुस्लिम से बचाकर रहेंगे, पर्यावरण संरक्षण की बात करना, हंस में प्रकाशित 'सफाई' उन कहानियों का आरंभिक काल थी जब से कथाओं में पर्यावरण चेतना संचार हुआ था। इस सदी में और दो कहानियॉ आती है जो सरोगेट मदर की मर्मांतक तकलीफ पर आधारित है। 'रस–प्रवाह' व 'गिनी पिग्स' सन 2010 में लिखी क्लीनीकल ट्रायल की हिन्दी की प्रथम कहानी भी हो सकती है। इसमें यह बताया गया कि किस तरह मनुष्य को चिकित्सा प्रयोग के नाम से मौत दी जाती है। यदि वे दवाई के प्रयोग के कारण भयंकर बीमार हो जाए तो अनुबंध के अनुसार उन्हें दवाई के कंपनियाँ पैसा भी नही देती। आलोचकों की नजर ऐसी कहानियों पर कम पडती है। इसलिए समाज के विभिन्न पहलुओं पर लिखी कहानियों की कहानीकार आलोचकों की लिस्ट में नही पाई।

रमणिका गुप्ता जी ने चालीस भाषाओं की रचनाकारों की स्त्री विमर्श की रचनाये हिंदी में 'हाशिये उलांघती औरत', नाम से अनुवादित करके उस कटु सत्य को कहलवा रही है कि औरत को हाशिये उलांघने की जरुरत क्यों पडती है। इस श्रृंखला के हिन्दी के तीन व ग्यारह भाषाओं के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुके है। तेलुगु लेखिकाओं ने स्त्री अंगो से जुडे प्रश्नों को बहुत जीवट से सामने रखकर बेबाकी को स्त्री विमर्श को सामने रखा है। 'ओल्गा' अयोनि के कहानी के माध्यम से योनी का प्रश्न उठाती है, जो वह कहती है–उन सर्पो को छूरे घोंपकर मार डालना चाहिए जो नन्हीं बच्चियों को एक अंगविशेष के कारण अगवा कर लेते है। 'चंद्रलता', 'बैलेंस शीट' कहनी में स्त्री–पूरुष के बीच खोई हुई बैलेंस शीट को खोजने का सफल प्रयास किया है। वे एक जीवट विमर्श समाज के सामने रखकर मांग रखती है कि जब स्त्री को मासिक धर्म हो तो ना उसका मजाक उडाया जाए, ना उसे नीचा या अछूत समझा जाए। बल्कि उसकी सहायता और सहानुभूति से पेश आये। कुप्पली पद्मा ने 'दो देहव्यापार करनेवाली नायिकाओं के वीभत्स रुप को चित्रित किया है, जिससे' पाठक का दिल दहल जायेगा क्योंकि उन्हें एड्स हो चुका है, वे हंस रही है, "अब वे आजाद है, रात में भी कहीं घूम सकती है क्योंकि कोई पुरुष उन्हें तंग नही करेगा" तेलुगु भाषी महिलायें स्त्री के इस अंग

विशेष पर बेबाक विमर्श कर अपनी लेखनी चलायी इसका कारण इनके समाज के एक विशेष परंपरा को जाता है।

इस सदी में स्त्री लेखन वे एक साहित्यिक इतिहास रचा। जिसमें 'संबोधन' पत्रिका में 'लिव इन रिलेशनशिप' पर एक विशेषांक प्रकाशित किया। हम देख रहे है आज महानगरों में 'लिव इन रिलेशनशिप' में रहनेवाली पीढी को उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है। इस सदी में लिखी इन कहानियों ने इस संबंध भरपूर विवेचन हुआ। जब दो लोग साथ रहते है तो कोई रिश्तेदार नही होता था इस तरह के रिश्ते में कानून बन गया हो तब भी स्त्री असुरक्षा महसूस करती है। सन 2006 में घरेलू हिंसा का जो कानून बना उसमें 'लिव–इन रिलेशनशिप' में रहनेवाली औरतों को भी कानूनी पत्नी को मिलने वाले सुरक्षा के अधिकार दिए गए। सन 2008 में सूप्रीम कोर्ट ने लिव–इन रिलेशन से जन्म लेने वाले बच्चों को कानूनी शादी से जन्म लेने वाले बच्चों जैसे अधिकार दिए। इसमें साहित्य और मिडिया का भरपूर योगदान रहा है।

इस सदी में लिखी गयी किरण सिंह की कहानी 'द्रौपदी पीक' एक दुर्लभ कहानी है। यह कहानी इतनी विषमताओं समेटती है कि पाठक पढकर सोंच में पड जाता है। इसमें रसूलपुर के नाचनेवाली की समस्या, नागा बनाने की प्रक्रिया उनकी अंदरुनी घृणित राजनीति, पर्वतों पर खाली टीन के डिब्बे व प्लास्टिक थैली व रेपर्स फेंककर पर्यावरण दूषित कराते लोग है। दूसरी राजनीति मल्टी नेशनल कंपनियों की घृणित साजिश उनके विज्ञापन, जिससे लोग द्रौपदी पीक यानि कि माऊंट एवरेस्ट की यात्रा पर जाने के एडवेंचर को भोगने लालायित हो और उनका पर्वतारोहन के लिए जरुरी सामान बिके। जिस यात्रा से पहले यात्री से लिखवा लिया जाता है कि यदि वह मर गया तो उसके शव को ढूँढकर उसके घरवालों तक पहुँचाते की जिम्मेदारी प्रशासन की नही है। प्रीतीपाल कौर की 'टांगे' की समस्या को लेकर कहानी लिखी। किस तरह स्त्री की विभिन्न पोषाकों में दिखाई देती अर्धनग्न टांगों से समाज कैसे परेशान रहता है। यह बताने का सफल प्रयास किया है।

नयी पीढी में योगिता यादव, इंदिरा नाग, सिनीवाली शर्मा, अंजू शर्मा की कहानियों का वातावरण व शैली का अपना अंदाज है। योगिता की 'क्लीन चिट' में इंदिरा गांधी की हत्या के बाद सरदार परिवारों की विधवाओं का वर्णन किया है। हत्यारों को किस तरह क्लीन चिट दी जाती है।

अंजू शर्मा ने गृहनी व स्वतंत्र रहनेवाली स्त्री के चिरपरिचित द्वंद्व को रेखांकित करते हुए 'नेमप्लेट' कहानी लिखी है। वीणा वत्सल की 'इरावती' में प्रकाशित कहानी में जंगल विभाग का वर्णन है, जो पहले स्त्री लेखन में पढने को नही मिला है। मृदुला श्रीवास्तव ने कोयला खदानों पर 'पी के की लोरें एक प्रमाणिक कहानी है। ईरा टाक युवा पिढी में एक सशक्त लोकप्रिय नाम है जिसने अधिकतर युवा समस्याओं पर कहानियों लिखी है।

इस सदी का युवा कहानीकार पीढी खुशनसीब है क्योंकि अनेक पुरस्कार योजनाएँ है जो प्रात्सोहित कर रही है। आज जो महिलाएँ लिख रही है उनके लिए अनेक द्वार खूल गये है। पिछली पीढी ने जो संपादको की मानसिकता को राजनीति को झेला है उससे ये स्त्री मुक्त है। मनचाहा अब वो नेट पर लिख रही है। अभिव्यक्ति का सूख भोग रही है। उस दबाव से मुक्त ये कितने उंचे मानदंड स्थापित करेंगी ये आनेवाला समय ही बनाएगा।

संदर्भ :

1.जिन्दगी की तनी डोर, ये स्त्रियाँ–मेघा बुक्त, नई दिल्ली
2.धर्म की बेडियाँ की बेडियॉ खोल रही है औरत–शिन्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली
3. धर्म के आर पार औरत–किताब घर नई दिल्ली
4.डॉ.विरेंद्र सिंह –हिंदी कथा साहित्य में पारिवारिक विघटन
5.डॉ.मिश्र रवींद्रनाथ–इक्कीसवी सदी का हिन्दी साहित्य : समय समाज और संवेदना